# ''विभिन्न अवधि के माध्यमिक शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावोत्पादकता का उत्पाद एवं परिणाम संकेतकों के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन''

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग़, आगरा की
पी0–एच0डी0 (शिक्षा) उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध की

**रूपरेखा**

**2018**


**शोध निर्देशक**
**प्रो0 एन.पी.एस. चन्देल**

**शोधार्थी**
**नरेन्द्र कुमार**

**विभागाध्यक्ष**
फाउण्डेशन्स ऑफ एजूकेशन

**संकाय प्रमुख**
शिक्षा संकाय

**शिक्षा संकाय**
**दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)**
**दयालबाग, आगरा – 282005**

# ''विभिन्न अवधि के माध्यमिक शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावोत्पादकता का उत्पाद एवं परिणाम संकेतकों के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन''

## 1.0 प्रस्तावना

सदैव से ही शिक्षक का पद समाज में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा है। बालकेन्द्रित शिक्षण में शिक्षक का महत्त्वपूर्ण एवं उच्च स्थान है। शिक्षा का पाठ्यक्रम, निर्देशन, कार्यक्रम, छात्र आदि कितने ही अच्छे क्यों न हो परन्तु जब तक उसमें एक अच्छे शिक्षक द्वारा प्राण नहीं फूके जायेगें तब तक वह शैक्षिक पद्धति सुचारू रूप से संचालित नहीं हो सकती है। देश की शिक्षण संस्थायें शिक्षक एवं प्रशिक्षण की ओर आकर्षित हो रही है।

शिक्षक के महत्त्व के विषय में कोठारी आयोग (1964–66) ने भी कहा है कि– ''सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है।''

शिक्षक को राष्ट्र निर्माता कहा जाता है। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) ने शिक्षक की शिक्षा में स्थिति निश्चित करते हुए कहा है कि ''एक शिक्षक उसकी विशेषताऐं, शैक्षिक योग्यताऐं, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा वह स्थान जो वह समाज तथा विद्यालय में प्राप्त करता है आदि सभी शैक्षिक पुर्नरचना का प्रतिनिधित्व करती हैं। शिक्षक के कार्य पर ही विद्यालय की शान एवं राष्ट्र का भविष्य निर्भर है।''

उपर्युक्त विचारधारा को देखते हुए कहा जा सकता है कि मानव जीवन को सुचारू, सुसंस्कृत तथा राष्ट्र को अधिक समृद्धशाली बनाने के लिए शिक्षण व्यवसाय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

वर्तमान में शिक्षण एक लोकप्रिय व्यवसाय बनता जा रहा है। शिक्षण की प्रक्रिया निश्चित रूप से शिक्षक–प्रशिक्षण पर निर्भर करती है क्योंकि शिक्षक–प्रशिक्षण ही वह माध्यम है जिसके द्वारा भावी अध्यापकगण वांछित कौशलों व तकनीकियों से परिचित हो सकते हैं और उनमें दक्षतार्जन करते हुऐ अपेक्षित शिक्षण व्यवहारों को आत्मसात करने में सक्षम हो पाते हैं। यह भी व्यवहार परिवर्तन अथवा सीखने की अभिव्यक्ति करने का ही प्रयास है, जो अपेक्षित तथा बौद्धिक

हो। समाज में आज जिस संख्या में कुशल शिक्षकों की आवश्यकता दिखाई देती है उसे पूरा करने के लिए शिक्षक–प्रशिक्षण की अत्यन्त आवश्यकता है।

## 1.1 माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की शिक्षा –

माध्यमिक स्तर के अध्यापक प्रायः स्नातक उपाधि प्राप्त किये हुए होते हैं तथा इन्होंने बी. एड. (Bachalor of Education) अथवा एल.टी. (Licentiate in Teaching) या बी.टी. (Bachelor of Teaching) प्रशिक्षण प्राप्त किया होता है। बी.एड. पाठ्यक्रम विश्वविद्यालयों के द्वारा संचालित किया जाता है एव ंबी.एड. पाठ्यक्रम की कक्षाऐं विश्वविद्यालयों व उनसे सम्बद्ध महाविद्यालयों के शिक्षा विभागों एवं शिक्षा संकायों में संचालित होती है। विभिन्न विश्वविद्यालयों के बी.एड. के पाठ्यक्रम में पर्याप्त भिन्नता पायी जाती है, ये भिन्नता प्रश्नपत्रों की संख्या, प्रकृति व विषयवस्तु इण्टर्नशिप कार्यक्रम से सम्बन्धित होती है फिर भी मोटे तौर पर शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय आधार, शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा तकनीकी, मापन व मूल्यांकन, विषय शिक्षण विधि, विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा का सौद्धान्तिक ज्ञान तथा इण्टर्नशिप कराया जाता है। देश के कई विश्वविद्यालय पत्राचार बी.एड. तथा ग्रीष्मकालीन बी.एड. जैसे पाठ्यक्रम भी आयोजित कर रहें हैं। सेवारत अध्यापकों के लिए भी बी.एड. के कुछ विशेष पाठ्यक्रम भी चलाये जाते हैं। पहले एल.टी. पाठ्यक्रम राज्य के शिक्षा विभाग के द्वारा संचालित किया जाता था, यह पाठ्यक्रम भी बी. एड. के समकक्ष होता है।

## 1.2.0 शिक्षक–प्रशिक्षण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

### 1.2.1 ब्रिटिश काल

भारत में औपचारिक रूप से शिक्षक–प्रशिक्षण का प्रारम्भ ब्रिटिश काल से हुआ। अंग्रेजों ने भारत पर लगभग 200 वर्षों तक शासन किया और इस अवधि में तत्कालीन ब्रिटिश प्रणाली के आधार पर भारत में भी नवीन अंग्रेजी प्रधान शिक्षा प्रणाली का प्रचलन किया गया।

ब्रिटिश काल में एक औपचारिक अध्यापकीय प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गयी, जिसे नार्मल स्कूल के नाम से जाना गया। यह व्यक्तिगत प्रयास ही सर्वप्रथम भारत में औपचारिक अध्यापक शिक्षा से सम्बन्धित सफल प्रयास रहा। इसके फलस्वरूप आगे चलकर अनेक ऐसे ही स्वैच्छिक संगठनों के द्वारा इस दिशा में प्रारम्भिक प्रयास किया गया। सन् 1819 में बंगाल के कलकत्ता स्कूल ऑफ सोसायटी और सन् 1823 में नैटिव एजूकेशन सोसायटी के द्वारा क्रमशः कलकत्ता तथा बम्बई में ऐसे ही औपचारिक प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना की गयी।

बुड के घोषणा–पत्र 1854 के साथ ही ब्रिटिश सरकार के द्वारा अध्यापकीय प्रशिक्षण की दिशा में ठोस और सार्थक प्रयत्न प्रारम्भ हुये। इस घोषणा पत्र में शिक्षकीय प्रशिक्षण की दिशा एवं क्षेत्र में सुविधाओं की कमी का पर्याप्त उल्लेख किया गया है और प्रशिक्षण हेतु संस्थानों की स्थापना जितनी जल्दी संभव हो, करने की संस्तुति की गयी।

**भारतीय शिक्षा आयोग (1882) ने स्पष्ट किया है कि– माध्यमिक शिक्षक–प्रशिक्षण हेतु नार्मल स्कूल सम्पूर्ण देश में खोले जाएँ, सिद्धान्त तथा अभ्यास दोनों के क्षेत्र में ही परीक्षा की व्यवस्था की जाए और सफल प्रशिक्षु मात्र को ही सरकारी अथवा वित्तीय सहायता प्राप्त माध्यमिक स्तरीय विद्यालयों में नियुक्ति दी जाय। साथ ही प्रशिक्षण कोर्स और पाठ्यक्रम दोनों ही आधार पर स्नातक एवं पूर्व–स्नातकों के लिये पृथक और विशेष प्रकार की प्रशिक्षण सम्बन्धी व्यवस्था की जाये।**

### 1.2.2 स्वतन्त्रता काल –

**राधाकृष्णन आयोग (1948)** ने स्पष्ट किया कि समय के साथ प्रशिक्षण मूल्यांकन पर अधिक अधिभार अभ्यास काल में प्रदान किया जाये।

**माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952)** ने सुझाव दिया कि प्रशिक्षण संस्थान दो प्रकार के हों– एक वह जहाँ उच्चतर माध्यमिक स्तरीय शिक्षा प्राप्त शिक्षकों के लिये प्रशिक्षण हेतु प्रबन्ध हो और

दूसरा वह जहाँ स्नातक स्तरीय अध्यापकों को प्रशिक्षित किया जा सके। प्रशिक्षण की अवधि क्रमशः दो एवं एक वर्ष हो।

### डा.ई.ए. पीयर्स समिति (1955) की संस्तुति

सिद्धान्त के समान ही प्रायोगिक कार्यों को अधिभार प्रदान किया जाये। परीक्षा के प्रश्नपत्र संख्या में चार ही हों, जैसे– शिक्षण सिद्धान्त और विद्यालय संगठन, शिक्षा मनोविज्ञान एवं स्वास्थ्य शिक्षा, दो विद्यालयी विषयों की शिक्षण विधि, भारतीय शिक्षा की आधुनिक समस्यायें आदि।

**कोठारी कमीशन (1964–66)** ने शिक्षा को मान्य, स्वतन्त्र/शैक्षिक विषय के रूप में महत्त्व दिया और वैकल्पिक विषय के रूप में स्नातक तथा परास्नातक पाठ्यक्रमों में सम्मिलित करने का सुझाव दिया। आयोग ने कहा कि अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों को विकसित करने के लिए चयनित विश्वविद्यलयों में शिक्षा विद्यालय खोले जायें। विद्यालयों के साथ शिक्षण अभ्यास का आयोजन किया जाये तथा प्रशिक्षण महाविद्यालय एवं अभ्यास विद्यालयों के मध्य स्टाफ का विनिमय किया जाये। प्रशिक्षण कार्यक्रम में स्तरोन्नयन के लिये कहा गया है कि– सुनियोजित दिशा निर्देशक पाठ्यक्रम के आयोजन के द्वारा प्रशिक्षण संस्थानों की उद्यमगत गुणवत्ता को बढ़ाने की व्यवस्था की जाय।

### एन.सी.ई.आर.टी. (1969) के द्वारा तैयार पाठ्यक्रम

एन.सी.ई.आर.टी. के द्वारा सन् 1969 में अध्यापक शिक्षा का एक व्यापक पाठ्यक्रम तैयार किया गया, जिसके चार भाग थे– (क) सामान्य उद्यमगत पाठ्यक्रम, (ख) छात्र शिक्षण, (ग) कार्यानुभव, (घ) सत्रीय कार्य

**(क) सामान्य उद्यमगत पाठ्यक्रम –** शिक्षा सिद्धान्त, शिक्षा मनोविज्ञान, आधुनिक भारतीय शिक्षा तथा समस्याएँ– ऐतिहासिक तथा आधुनिक समस्याऐं, विद्यालय संगठन तथा किसी एक क्षेत्र में विशेषीकरण– स्वास्थ्य, जनसंख्या, शिक्षा आदि हेतु विद्यालयीय विषयों के शिक्षण की प्रविधियाँ।

**(ख) छात्र शिक्षण –** इसके अन्तर्गत तैयारी मूलक कोर्स, प्रदर्शन पाठ, आलोचना तथा आलोचनात्मक पाठ, खण्ड शिक्षण अभ्यास (ब्लॉक प्रैक्टिस) को स्थान दिया गया है।

**(ग) कार्यानुभव** – इसमें समाज उपयोगी उत्पादक कार्य, सामुदायिक सेवा आदि क्रियाकलापों को स्थान दिया गया।

**(घ) सत्रीय कार्य** – इस अंश में शिक्षण सहायक सामग्रियों के निर्माण तथा उपयोग, श्यामपट्ट कार्य, पाठ्य सहगामी क्रियाकलाप, मनोवैज्ञानिक प्रायोगिक कार्य, विद्यालय योजना का अध्ययन, मूल्यांकन तथा अभिलेख निर्माण, विद्यालयी अभिलेखों का अध्ययन आता है।

## विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (U.G.C.), 1986 पाठ्यक्रम समिति द्वारा प्रस्तावित बी. एड. पाठ्यक्रम–

**भाग अः सिद्धान्त –** मुख्य विषय प्रश्नपत्र – सीखने की प्रकृति एवं विकास, द्वितीय प्रश्नपत्र – भारतीय समाज में अध्यापक व शिक्षा, तृतीय प्रश्नपत्र – शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, चतुर्थ प्रश्नपत्र – खण्ड अः विद्यालय प्रबन्ध व खण्ड ब चयनित ।

**ऐच्छिक विषय : प्रथम विकल्प** – पंचम प्रश्न पत्र – शिक्षण विधियाँ, षष्ठ प्रश्नपत्र – शिक्षण विश्लेषण।

**द्वितीय विकल्प** – सप्तम प्रश्न पत्र – शिक्षण विधियाँ, अष्टम प्रश्न पत्र – शिक्षण विश्लेषण

**भाग बः अभ्यास** – शिक्षण अभ्यास, प्रयोगात्मक कार्य, शिविर, कार्यअनुभव, पाठ्य सहगामी क्रियाओं में सहभागिता

**भाग सः छात्रत्व** – प्रथम चरण – छात्र कार्यक्रम के लिये अनुस्थापन,

**द्वितीय चरण –** विद्यालय व विद्यालय प्रणाली व अवलोकन तथा विषय अध्यापक के सहायक के रूप में कार्य करना।

**तृतीय चरण** – नियमित शिक्षक की तरह कार्य करना।

## राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 –

21वीं सदी के आगमन से शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम को संशोधित करने के प्रयास किये गये। पाठ्यक्रम को संशोधित करने के ये प्रारम्भिक प्रयास समकालीन समाज की आवश्यकताऐं, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का मॉडल (प्रतिमान) पाठ्यक्रम (2001), एन.सी.टी.ई. (2003) और एन.सी.ई.आर.टी. (2004) के शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम को दृष्टिगत रखते हुये किया गया है।

माध्यमिक  स्तर पर पाठ्यक्रम निम्न पाठ्यक्रम घटकों को समाविष्ट करता है– समकालीन और उभरता हुआ भारतीय समाज, शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया, मूल्यांकन, पाठ्यक्रम विकास, क्रिया अनुसन्धान, शैक्षणिक पाठ्यक्रम, वैकल्पिक पाठ्यक्रम, अभ्यास शिक्षण, सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, कार्य इन्टर्नशिप आदि।

एन.सी.एफ., 2005 (N.C.F., 2005) में पाठ्यक्रम में भार की समस्या को भी संदर्भित किया गया है। इस समस्या की ओर इससे पहले भी इशारा करते हुए यशपाल समिति ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय में एक रिपोर्ट ''बिना बोझ सीखना'' सन् 1993 में प्रस्तुत की थी।

सन् 2000 के पाठ्यक्रम की समीक्षा की गयी थी पर बच्चों के पाठ्यक्रम के भार की समस्या अनसुलझी रही। बचपन व किशोरावस्था में विद्यार्थियों पर पाठ्यक्रम का अधिक भार एक तनाव पैदा करता है, और उनका शारीरिक व मानसिक विकास अवरूद्ध हो जाता है।

एन.सी.टी.ई. द्वारा तैयार शिक्षक–शिक्षा का संशोधित पाठ्यक्रम एन.सी.ई.आर.टी. (2004) के सहयोग से निर्मित किया गया, क्योंकि एन.सी.टी.ई. ने माना कि शिक्षक–शिक्षा व विद्यालय शिक्षा के पाठ्यक्रम में एक समन्वय होना चाहिए। एन.सी.एफ., 2005 पाठ्यक्रम सुधार के लिये कुछ सिद्धान्तों का सुझाव देता है–

1 सीखने की विधि यांत्रिक विधि से दूर होती है।

2 विद्यालय से बाहर के जीवन को ज्ञान से जोड़ना।

3 यह सुनिश्चित करना कि सीखना पाठ्यपुस्तक केन्द्रित नहीं होता है।

4 परीक्षा को अधिक लचीला बनाना।

5 देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था का ध्यान रखना।

## राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2009 –

सन् 2009 में अध्यापक–शिक्षा के पाठ्यक्रम की रूपरेखा बनाने का प्रयास एन.सी.टी.ई. (N.C.T.E.) द्वारा एन.सी.ई.आर.टी. के सहयोग से किया गया। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2009 में सन् 2005 के एन.सी.ई.आर.टी. (N.C.E.R.T.) के विद्यालय शिक्षा के राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के सन्दर्भ में शिक्षक–शिक्षा पाठ्यक्रम को अधतन (Update) किया गया। इस पाठ्यचर्या रूपरेखा में एन.सी.एफ., 2005 (N.C.F. 2005) के साथ इसकी सुसंगता को सुनिश्चित किया गया। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2009 में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि– **''राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा सीखने की प्रक्रिया में छात्र की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करती है, और ज्ञान के रूप में सामाजिक निर्माण होता है।''**

शिक्षार्थी (इस मामले में शिक्षक) सीखने की प्रक्रिया के दौरान प्रश्नों, सीखने की सामग्री और अध्यापन से जुड़े। शिक्षक–शिक्षा के पाठ्यक्रम में संशोधन का नवीनतम प्रयास एन.सी.ई.आर.टी. की सामसामयिक आवश्यकताओं की सिफारिशों के सन्दर्भ में किया गया।

अतः शिक्षक–शिक्षा पाठ्यक्रम इस प्रकार का हो, जो शिक्षकों को स्वयं आत्मनिरीक्षण करने एवं अपने अभ्यास को प्रतिबिम्बित करने का अवसर प्रदान करे। विभिन्न पाठ्यक्रम सुधार प्रयासों पर जोर देने के बावजूद चरणबद्ध विशिष्ट पाठ्यक्रम विकसित करने हेतु अभी भी अनेक चुनौतियाँ मौजूद है। इन चुनौतियों में से एक विद्यालयी शिक्षा के लिऐ अभ्यास में काफी असंगति भी है। अतः शिक्षक–प्रशिक्षण की अवधि सम्पूर्ण देश में एक समान होनी चाहिए। अभ्यास–शिक्षण की मौजूदा अवधारणा में सुधार किये जाने की आवश्यकता है। और इसे विद्यालय के अनुभव/विद्यालय के अनुलग्नक द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए। एन.सी.एफ., 2009 (NCF, 2009) में यह भी कहा गया कि वर्तमान शिक्षक–शिक्षा की रूपरेखा और अभ्यास कार्यक्रम बड़े

पैमाने पर पाठ्यक्रम, ज्ञान और सामाजिक मान्यताओं पर आधारित है। पाठ्यक्रम रूपरेखा जो कि शिक्षक के विचारों की प्रगति और पेशेवर और व्यक्तिगत विकास के लिए बहुत कम प्रस्ताव (Offer) करता है। अतः हमारे देश को एक नयी पाठ्यक्रम रूपरेखा के निर्माण हेतु पुनर्विचार करना चाहिए।

## एन.सी.टी.ई. अधिनियम, 2014 (NCTE, Regulation, 2014) –

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) अधिनियम 1993 (1993 का 73वाँ) के खण्ड 32 के उपखण्ड (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए तथा राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (विनिमय मानदंड तथा क्रियाविधि) विनिमय 2009 का प्रयोग करते हुए राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने 28 नवंबर 2014 को अधिसूचना जारी की तथा 1 दिसम्बर 2014 को इसे कानून का रूप दिया गया। इस कानून को एन.सी.टी.ई. अधिनियम, 2014 के नाम से जाना जाता है।

एन.सी.टी.ई. अधिनियम, 2014 से पहले जितनी भी पाठ्यक्रम रूपरेखा प्रस्तुत की गयी वे केवल एक दिशानिर्देश मात्र थी। लेकिन एन.सी.टी.ई., अधिनियम एक कानून है, और इस अधिनियम द्वारा सुनिश्चित शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम सभी प्रशिक्षण विभागों व संस्थाओं के लिये बाध्यकारी होगा।

## बी.एड. (शिक्षा में स्नातक) कार्यक्रम के लिए मानदंड और मानक –

शिक्षा स्नातक कार्यक्रम जिसे सामान्यतः बी.एड. कार्यक्रम कहा जाता है, एक संवृत्तिक पाठ्यक्रम है, जो उच्च प्राथमिक अथवा मिडिल स्कूल (कक्षा–6–8), माध्यमिक स्तर (कक्षा 9–10) एवं उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा 11–12) के लिए अध्यापक तैयार करता है।

## पाठ्यचर्या –

बी.एड. की पाठ्यचर्या का अभिकल्प इस प्रकार होगा जिसमें विषय के ज्ञान, मानव विकास, शिक्षा शास्त्रीय ज्ञान तथा संप्रेषण कौशलों का संघटन हो। इस कार्यक्रम में तीन प्रमुख

पाठ्यचर्यात्मक क्षेत्र सम्मिलित होगे ये क्षेत्र है शिक्षा के परिप्रेक्ष, पाठ्यचर्यात्मक तथा शिक्षाशास्त्रीय अध्ययन तथा क्षेत्र के साथ विनियोजन।

इन पाठ्यचर्यात्मक क्षेत्रों के अन्तर्गत आने वाले पाठ्यक्रम मूल लेखों के सघन अध्ययन, संगोष्ठी/सत्र लेखन प्रस्तुतीकारण तथा क्षेत्र के साथ सतत् विनियोजन पर आधारित होगें। पाठ्यक्रमों के कार्य सम्पादन में विभिन्न दृष्टिकोणों का उपयोग किया जायेगा जैसे– मामला अध्ययन, विमर्शात्मक जर्नलों, बच्चों के प्रेक्षणों तथा विविध सामाजिक–सास्कृतिक परिवेशों के समुदाय के साथ अन्योन्यक्रिया पर चर्चा सूचना सम्प्रेषण प्रौधोगिकी (ICT), लिंग तथा योग शिक्षा एवं निःशक्तता/समावेशी शिक्षा बी.एड. पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग होगी।

## 1. सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम –

**(क) शिक्षा के परिप्रेक्ष्य –** शिक्षा के परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत बाल्यावस्था अध्ययन, बाल विकास तथा किशोरावस्था, समकालीन भारत व शिक्षा, शिक्षा में दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, ज्ञान के सैद्धान्तिक आधार तथा पाठ्यचर्या, अध्यापन और अधिगम, विद्यालय तथा समाज के सन्दर्भ में लिंग तथा समावेशी शिक्षा पाठ्यक्रम सम्मिलित है।

बाल्यावस्था अध्ययन सम्बन्धी पाठ्यक्रम छात्र–अध्यापक को भारतीय समाज और शिक्षा के साथ जोड़ने में समाजशास्त्रीय विश्लेषण के अवधारणात्मक साधनों और विविध समुदायों, बच्चों व विद्यालयों के साथ जुड़ने के प्रायोगिक अनुभवों की प्राप्ति में सक्षम बनायेगा। समकालीन भारत तथा शिक्षा सम्बन्धी पाठ्यक्रम विविधता सम्बन्धी मुद्दों, भारतीय समाज में असमानता तथा उपान्तिकीकरण और इनके शैक्षिक निहितार्थ।

**(ख) पाठ्यचर्या तथा शिक्षणशास्त्रीय अध्ययन –** पाठ्यचर्या तथा शिक्षण शास्त्रीय अध्ययनों के पाठ्यक्रम में भाषा संबंधी पक्ष सम्मिलित होगें जो पाठ्यचर्या तथा सम्प्रेषण, विषय की समझ, विद्यालयी विषय का सामाजिक इतिहास तथा इसके शिक्षाशास्त्रीय आधारों पर लागू होगा और

जिनका बल अध्येता पर होगा। इसके अतिरिक्त इसमें अधिगम के लिए मूल्यांकन के सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष भी सम्मिलित होगें।

## 2. क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप के साथ संबंध–

बी.एड. कार्यक्रम स्वयं के साथ बच्चे, समुदाय और विभिन्न स्तरों पर विद्यालय के साथ एक दीर्घकालीन व अखंड संबंध स्थापित करेगा, यह कार्य विभिन्न पाठ्यचर्यात्मक क्षेत्रों में निकट संबंध स्थापित करके किया जायेगा। यह पाठ्यचर्यात्मक क्षेत्र (अर्थात् क्षेत्र व प्रयोगात्मक क्रियाकलाप) उपर्युक्त दो मुख्य पाठ्यचर्यात्मक क्षेत्र के मध्य एक महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य करेगा। जो इसके तीन घटकों के माध्यम से संपादित होगा। ये घटक हैं–

- **ऐसे कार्य और प्रदत्त कार्य असाइनमैंट जो सभी पाठ्यक्रमों में सम्मिलित हो।**
- **स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण (इन्टर्नशिप)**
- **व्यावसायिक क्षमताओं को संबर्धित करने वाले पाठ्यक्रम**

## स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण (इन्टर्नशिप) –

स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण (इन्टर्नशिप) का सम्बन्ध क्षेत्र के साथ परियुक्ति नामक मुख्य पाठ्चर्यात्मक क्षेत्र के अंश के रूप में है, और इसका अभिकल्पन परिप्रेक्षों, व्यावसायिक क्षमता, अध्यापकीय प्रभावनीयताओं और कौशलों में एक व्यापक संग्रह के विकास की ओर अग्रसर करेगा। बी.एड. की पाठ्यचर्या अध्येताओं और विद्यालयों जिसमें अधिगम का सतत् और व्यापक मूल्यांकन भी सम्मिलित है के साथ एक दीघीकृत और अविच्छिन्न परियुक्ति प्रदान करेगी। जिससे वर्षभर आस–पड़ोस के विद्यालयों के साथ सहक्रिया संभव होगी। ये क्रियाकलाप प्रथम वर्ष 4 सप्ताहों में आयोजित किये जायेगें।

## चार वर्षीय एकीकृत (बी.ए., बी.एड./बी.एस.सी., बी.एड.) पाठ्यक्रम –

चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम का लक्ष्य सामान्य अध्ययन जिसमें विज्ञान (बी.एस.सी., बी. एड.) और सामाजिक विज्ञान या मानविकी (बी.ए., बी.एड.) तथा वृत्तिक अध्ययन जिसमें शिक्षा के आधार, विद्यालयी विषयों का शिक्षणशास्त्र तथा एक विद्यालय शिक्षक के कार्यों एवं कार्यविधियों जुड़ी प्रायोगिकी का एकीकरण है। यह सिद्धान्त और व्यवहार में सन्तुलन बनाये रखता है, तथा कार्यक्रम के घटकों के बीच सुसंगति एवं जुड़ाव को बनाये रखता है और एक माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक के विस्तृत ज्ञान–आधान को प्रस्तुत करता है। कार्यक्रम का लक्ष्य शिक्षा के उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तरों के लिये शिक्षकों को तैयार करना है।

## पाठ्यचर्या –

बी.एस.सी., बी.एड. और बी.ए., बी.एड. कार्यक्रम में विज्ञान और कला में स्नातक कार्यक्रमों के समतुल्य प्रकरण पाठ्यक्रम तथा सहायक पाठ्यक्रम, शिक्षणशास्त्रीय पाठ्यक्रम और प्रायोगिकी जिसमें विद्यालयी अनुभव एवं शिक्षा में प्रशिक्षुता शामिल है।

(क) सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम

(i) शिक्षा के परिप्रेक्ष्य –

(क) शिक्षा के परिप्रेक्ष्यों को सामान्य शिक्षा में उप–पाठ्यक्रम के रूप में रखा गया है। ताकि वे 21वीं सदी की कक्षाओं में आवश्यक ज्ञान और कौशलों से लैस हो पायें।

(ख) शिक्षा के आधार उप–पाठ्यक्रम में शिक्षा के सिद्धान्त, शिक्षा के लक्ष्य आदि भारतीय समाज की विकासशील समझ, भारत में शिक्षा, ज्ञान और उसके अर्जन की प्रकृति, किशोरावस्था को केन्द्र में रखकर मानव विकास, अधिगम सिद्धान्त इत्यादि क्षेत्र सम्मिलित हैं।

(ग) शिक्षा अध्ययन उप–पाठ्यक्रम विद्यार्थी शिक्षक माध्यमिक विद्यालय शिक्षक के शिक्षण शास्त्रीय ज्ञान के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित मूल अवधारणाओं और सिद्धान्तों को सीखने में मदद करेगा।

### (ii) पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्रीय अध्ययन –

(अ) शिक्षणशास्त्रीय अध्ययन में गणित या शारीरिक शिक्षा या जीवविज्ञान, भारतीय भाषाऐं अंग्रेजी तथा सामाजिक विज्ञान चार पाठ्यक्रम है।

(ब) कार्यक्रम में अध्ययन का अन्य क्षेत्र शिक्षक के शिक्षण–क्षेत्र की विशेषज्ञता से सम्बन्धित है, जैसे– बी.एस.सी., बी.एड. कार्यक्रम में गणित, भौतिक विज्ञान तथा जीवविज्ञान तथा बी.ए., बी. एड. में अंग्रेजी, भारतीय भाषा या अंग्रेजी का चुनाव कर रहें हैं, उन्हें विषय क्षेत्र से सम्बन्धित सभी निर्धारित पाठ्यक्रमों को पढ़ना होगा।

### (iii) भाषा एवं सम्प्रेषण तथा आत्म–विकास –

इन पाठ्यक्रमों का रूपांकन निद्यार्थी शिक्षक को उस भाषा की सम्प्रेषण क्षमता विकसित करने में सक्षम बनाने के लिऐ किया जायेगा जिसमें उसे पढ़ाना है।

### (iv) प्रायोगिकी एवं विद्यालय प्रशिक्षुता –

विद्यालयी अनुभव कार्यक्रम छात्राध्यापकों को व्यवहार के बुनियादी मुद्दों को देखने व समझने में मदद करते हैं। धीरे–धीरे शिक्षण अनुभव में प्रशिक्षुता के दौरान प्रशिक्षुता की कुल अवधि 20 सप्ताह की होगी।

## 1.3.0 शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावोत्पादकता –

**बिजनिस डिक्शनरी (2018) के अनुसार–**

प्रभावोत्पादकता वह स्तर है, जिस पर उद्देश्य की प्राप्ति की जाती है, तथा वह सीमा जहाँ तक कि लक्षित समस्याओं का समाधान किया जाता है अथवा उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता

है। प्रभावोत्पादकता के निर्धारण के समय लागत को ध्यान रखना आवश्यक नहीं होता। यदि लागत के सापेक्ष प्रभावोत्पादकता का अध्ययन किया जाये तो कुशलता (Effeciency) शब्द का प्रयोग करना उचित होता है। कुशलता का सम्बन्ध जहाँ चीजों को ठीक करने (Doing the things right) से होता है। वही प्रभावोत्पादकता का सम्बन्ध ठीक कार्य करने (Doing right things) से होता है।

## शैक्षिक कार्यक्रम की प्रभावोत्पादकता के संकेतक –

बिंढ़म, एम. डगलस (1988) ने शैक्षिक कार्यक्रमों की प्रभावोत्पादकता का निर्धारण करने के लिये चार प्रकार के निर्धारक बताये हैं– अदा (Input), प्रक्रिया (Process), उत्पाद (Output), परिणाम (Outcomes)

**1. अदा (Input)** – शैक्षिक कार्यक्रम की अदा के अन्तर्गत छात्रों की विशेषताऐं (Students Characterstics), शिक्षकों की विशेषताऐं (Teachers Characterstics), विद्यालय विशेषताऐं (School Characterstics), अनुदेशन सामग्री और उपकरण विशेषताऐं (Instructional material and equipment characterstics), सुविधा विशेषताऐं (Facilitics Characterstics) आदि संकेतकों को सम्मिलित किया जाता है। किसी शैक्षिक कार्यक्रम की प्रभावोत्पादकता का अध्ययन करना एक जटिल कार्य है। इसके अध्ययन में जो सबसे प्रमुख समस्या आती है, वह समस्या यह है कि प्रभावोत्पादकता को परिभाषित कैसे किया जाए, इसके संकेतक कौन–कौन से है ? इन संकेतकों का मापन कैसे किया जाय ?

**2. प्रक्रिया (Process)–** प्रक्रिया से आशय विभिन्न अदा संकेतकों के मध्य अन्तःक्रिया से है इसके अन्तर्गत अनुदेशात्मक संगठन की शैली (Forms of instructional organization), वैकल्पिक तकनीकियाँ (Alternative Technologies), शिक्षक और छात्र द्वारा प्रयोग किया समय आदि संकेतकों को सम्मिलित किया जाता है।

**3. उत्पाद (Output)–** शैक्षिक कार्यक्रम के उत्पाद का सम्बन्ध उसकी तात्कालिक प्रदा से होता है। इसके अन्तर्गत संज्ञानात्मक सम्प्राप्ति (Cognitive Achievement), उन्नत नियमावली कौशल (Improved manual skills), अभिवृत्तीय परिवर्तन (Atitudinal changes), व्यावहारिक परिवर्तन (Behavioural changes) आदि संकेतकों को सम्मिलित किया जाता है।

**4. परिणाम (Outcomes)–** किसी शैक्षिक कार्यक्रम के परिणाम संकेतकों से अभिप्राय उसके दूरगामी परिणामों से होता है। इसके अन्तर्गत रोजगार, आय, पदवी (Status), अभिवृत्तीय परिवर्तन (Attitudinal changes), व्यावहारिक परिवर्तन (Behavioural changes) आदि संकेतकों को शामिल किया जाता है।

अदा एवं प्रक्रिया सम्बन्धी निर्धारकों का अध्ययन करना उस समय अधिक उपयुक्त होता है, जब कोई शैक्षिक कार्यक्रम संचालित हो रहा है। एन.सी.टी.ई. ने एक वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम बन्द कर दिया है, अतः इसकी अदा व प्रक्रिया आयामों की प्रभावोत्पादकता का अध्ययन करना सम्भव नहीं है। वस्तुतः यदि अदा एवं प्रक्रिया प्रभावोत्पादक हो तो शैक्षिक कार्यक्रम के तात्कालिक उत्पाद एवं दूरगामी परिणामों पर भी इनका प्रभाव अवश्य होगा। यदि उत्पाद एवं परिणामों के आधार पर भी किसी शैक्षिक कार्यक्रम की प्रभावोत्पादकता का निर्धारण किया जाये तो अप्रत्यक्ष रूप से परिणाम व उत्पाद उस शैक्षिक कार्यक्रम की अदा व प्रक्रिया की प्रभावोत्पादकता की ओर संकेत करेंगें।

यद्यपि उत्पाद व परिणाम संकेतक भी कई प्रकार के हो सकते हैं, परन्तु शोध की सीमाओं को ध्यान में रखते हुये शैक्षिक कार्यक्रमों की प्रभावोत्पादकता के निर्धारण के लिये केवल निम्नलिखित संकेतकों को सम्मिलित किया गया है।

### 1.3.1 उत्पाद संकेतक (Output indicators)–

1 **माँग अनुपात (Demand Ratio)–** प्रवेश के लिये उपलब्ध स्थानों के आवेदकों की संख्या के बीच अनुपात।

2 **सम्प्राप्ति प्रभाव (Achievement Effect)–** पाठ्यक्रम के परीक्षा परिणाम।

3 **उत्पाद समानता (Output Equality)–** विभिन्न वर्ग/समूहों के विद्यार्थियों के परीक्षा परिणामों में समानता।

### 1.3.2 परिणाम संकेतक (Outcome Indicators)–

1 **भावी शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रवेश–** बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद शिक्षा की उच्च डिग्री/डिप्लोमा/प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रवेश।

2 **भावी शिक्षा एवं प्रशिक्षण में उपलब्धि–** भावी शिक्षा एवं प्रशिक्षण में परीक्षा परिणाम।

3 **रोजगार–** प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्तियों की वर्तमान समय में रोजगार की स्थिति।

4 **आय –** प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्तियों की रोजगार से प्राप्त आय की स्थिति।

5 शिक्षण कौशल एवं व्यावसायिक दक्षता।

6 अभिवृत्ति।

## 2.0 समस्या का प्रादुर्भाव –

वर्तमान में भारत में बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम संचालित किया जा रहा है, यह एन.सी.टी.ई. अधिनियम, 2014 के अनुसार है एन.सी.टी.ई. अधिनियम, 2014 के भाग–3, सैक्शन–4 में चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. की भी बात कही गयी है, अतः एक वर्षीय बी.एड., द्विवर्षीय बी.एड. व चार वर्षीय बी.एड. से सम्बन्धित कुछ अध्ययन हुये हैं, जो इस प्रकार है–

| क्रम.सं. | शोधकर्त्ता एवं वर्ष | शोध विषय | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|
| 1. | सिंह, यशपाल (1999) | औपचारिक एवं अनौपचारिक स्रोतों के माध्यम से नामांकित बी.एड. छात्राध्यापकों के आत्मप्रत्यय, शिक्षण | औपचारिक स्रोतों के माध्यम से नामांकित छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि व शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति अनौपचारिक स्रोतों से नामांकित छात्राध्यापकों से बेहतर है। एवं मानव मूल्य व आत्मप्रत्यय के मामले में |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | के प्रति अभिवृत्ति एवं मानवीय मूल्यों के सन्दर्भ में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन। | औपचारिक व अनौपचारिक स्रोतों से नामांकित छात्राध्यापक समान थे। |
| **2.** | बंसल, मधुरलता (1999) | औपचारिक एवं अनौपचारिक स्रोतों के माध्यम से नामांकित बी.एड. छात्राध्यापकों के आत्मप्रत्यय, शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं समायोजन के सन्दर्भ में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन। | औपचारिक रूप से नामांकित छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि व शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति अनौपचारिक रूप से नामांकित छात्राध्यापकों से बेहतर है, एवं समायोजन में अनौपचारिक रूप से नामांकित छात्राध्यापक बेहतर पाये गये। |
| **3.** | लिन्डसे, मरथा ऐन (2000) | नवाजो हाईस्कूल के छात्रों को इंटरनेट सूचना साक्षरता सिखाने के लिये पाठ्यक्रम विकास का रचनात्मक अध्ययन। | इंटरनेट सूचना साक्षरता लाने के लिये पाठ्यक्रम में विषयवस्तु स्पष्ट व संगठित हो, एवं इंटरनेट के मूलभूत ज्ञान के लिये एक मजबूत पाठ्यक्रम सम्बद्धता हो। |
| **4.** | नीमी, हेनल और | माध्यमिक विद्यालय | माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों का |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | सिंहवोनेन, रितका जक्कू (2006) | शिक्षकों का शिक्षक–शिक्षा पाठ्यक्रम | पाठ्यक्रम शिक्षकों में शिक्षण दक्षता लाने वाला व समाज की समसामयिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला होना चाहिए। |
| **5.** | डेविड, डब्ल्यू. पाइल और ऐलन, सेयर्स (2006) | ए.बी. एड कोर्स फॉर सर्विंग टीचर्सः अन एवेलुऐशन ऑफ द फर्स्ट ईयर (2006) | बी.एड. के प्रथम वर्षीय पाठ्यक्रम द्वारा सुझायी दिशा में प्रगति की जा रही है, एवं पाठ्यक्रम निश्चित रूप से सामाजिक एकीकरण की दिशा में लक्ष्य को पूरा कर रहा है। |
| **6.** | डेमी, जान. वेन (2006) | एजूकेशनल अफेक्टिवनेस अन इन्ट्रोडक्शन टू इन्टरनेशनल एण्ड फ्लेमिश रिसर्च ऑन स्कूल, टीचर्स एण्ड क्लासेज | शैक्षिक प्रभावोत्पादकता के उन्नयन हेतु विद्यालय और उसकी कक्षाऐं काम करते हैं एवं शैक्षिक प्रभावोत्पादकता पर विद्यालय गैर–संज्ञानात्मक परिणामों की अपेक्षा उपलब्धि व कक्षाओं का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। |
| **7.** | शफकत हुसैन खान, ए. और मोहम्मद सईद, बी. (2009) | बी.एड. कार्यक्रम की गुणवत्ता का मूल्यांकन : छात्रों के अपने कॉलेज अनुभव के विचार | बी.एड. कार्यक्रम छात्राध्यापकों के ज्ञान और कौशलों को बढ़ाने एवं अद्यतन करने में प्रभावी रहा है। |
| **8.** | कोम्पटन, लिली के.एल. (2009) | ऑनलाइन शिक्षण हेतु सेवा–पूर्व | सेवापूर्व शिक्षकों के पाठ्यक्रम में प्रौद्योगिकी युक्त गुणकारी शिक्षा को |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | शिक्षकों की तैयारी | पाठ्यक्रम में एकीकृत किया जाना चाहिए ताकि भावी शिक्षकों में उचित कौशलों का विकास हो सके। |
| **9.** | आपडेनकर, मेरी क्रिश्चिन और डेमी, जान वेन (2010) | द अफेक्ट ऑफ स्कूल एण्ड क्लास ऑन मेथमेटिक्स अचीवमेन्ट | बहुस्तर विश्लेषण के परिणाम विद्यालयों में एवं विद्यालय व कक्षाओं के बीच महत्वपूर्ण मांग अन्तर दर्शाते हैं एवं लड़कियों का अनुपात लड़कों की अपेक्षा सकारात्मक गणित उपलब्धियों से सम्बन्धित था। |
| **10.** | कुमारी, किरन (2010) | शिक्षा मनोविज्ञान में सेवा–पूर्व शिक्षकों के लिये बहुमाध्यम अधिगम की प्रभावशीलता का अध्ययन। | परम्परागत विधियों की अपेक्षा बहुमाध्यम द्वारा अधिगम में उन्नति पायी गयी एवं अधिगम सार्थक व प्रभावी रहा। |
| **11.** | सेमन्स, पेम और बेकम, लिन्दा (2011) | अफेक्टिव स्कूल्स, इक्विटी एण्ड टीचर अफेक्टिवनेसःअरिव्यू ऑफ द लिटरेचर | विद्यालय के सफल सिद्धान्त व विद्यालय की समस्त सफल प्रक्रियाऐं ही विद्यालय की प्रभावशीलता को बढ़ाते हैं। |
| **12.** | रेनोल्ड्स, डेविड सिमन्स, पेम. फ्रन, बाइक. और डेमी, जान वेन (2014) | एजूकेशनल अफेक्टिवनेस रिसर्च (ई.ई.आर.) : अ स्टेट ऑफ द आर्ट रिव्यू | विद्यालय की शैक्षिक प्रभावोत्पादकता में गिरावट का मुख्य कारण नेतृत्व की कमी, बुनियादी कौशलों के अधिग्रहण पर जोर देने में कमी एवं छात्र प्रगति |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | की असंगत निगरानी है। |
| **13.** | हू. एहुआ (2014) | मैनलैण्ड में दो पायलट विश्वविद्यालय में निशुल्क शिक्षा नीति के सन्दर्भ में शिक्षक–शिक्षा पाठ्यक्रम का मामला अध्ययन। | शिक्षक–शिक्षा के निःशुल्क होने से शिक्षकों के शिक्षण में गुणात्मक उन्नयन आया है। |
| **14.** | कौर सिंघा, मनप्रीत और बजाज, रुचि (2015) | गुरूगोविन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली के सन्दर्भ में नये बी. एड. पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन में चुनौतियाँ। | शोध निष्कर्ष में पाया कि क्रियान्वयन में कुछ चुनौतियाँ जैसे– प्रश्नपत्रों का अधिकभार, विषयवस्तु का अतिव्यापन, प्रस्तुतीकरण में तार्किकता की कमी, पुस्तकों की अनुपलब्धता तथा आई.सी. टी. को मूल पर्चों में शामिल न करना। |
| **15.** | जयकुमार, आर. (2016) | भारत में द्विवर्षीय बी. एड. कार्यक्रम के फायदे और नुकसान | द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रम को अद्यतन किया जाये और इसे बनाये रखने की आवश्यकता है। |
| **16.** | प्रधान, परशुराम (2016) | भारत में शिक्षक–शिक्षा की रूपरेखाऐं | शिक्षक–शिक्षा की रूपरेखाओं में कुछ कमियाँ– बी.एड. इन्टर्नशिप का एम.एड. पाठ्यक्रम का हिस्सा न होना, अनुभवजन्य अधिगम की कमी, |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | शिक्षक–शिक्षा में अध्यापन कला की कमी आदि है। |
| **17.** | सूद, डम्मर सिंह (2017) | फोर ईयर बी.एड. कोर्स साइकल फाइनल | सन् 1991 से तीन वर्षीय बी.एड. संचालित की जा रही थी, लेकिन सन् 2017 से चार साल की बी.एड. होगी, जिसमें अकादमिक व व्यावसायिक विषय शामिल होगें। |

पहले भी एकवर्षीय बी.एड., द्विवर्षीय बी.एड. एवं चारवर्षीय एकीकृत बी.एड. से सम्बन्धित कुछ अध्ययन हुये हैं। इन अध्ययनों में सिंह (1999), मधुरलता (1999), ने औपचारिक एवं अनौपचारिक स्रोतों के माध्यम से नामांकित बी.एड. छात्राध्यापकों के आत्मप्रत्यय, शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति, मानव मूल व समायोजन से सम्बन्धित अध्ययन किये हैं तथा पाठ्यक्रम विकास, मूल्यांकन, रूपरेखा व शिक्षक–शिक्षा के निःशुल्क होने से सम्बन्धित अध्ययन क्रमशः मरथा ऐन (2000), खान और सईद (2009), परशुराम (2016), एहुआ (2014) ने किये। द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रम के फायदे और नुकसान एवं इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन में चुनौतियों से सम्बन्धित अध्ययन क्रमशः मनप्रीत और रूचि (2015) तथा जयकुमार (2016) ने किया। शिक्षक–शिक्षा पाठ्यक्रम के अध्ययन के अतिरिक्त कुछ अध्ययन शैक्षिक प्रभावशीलता, शिक्षक प्रभावशीलता पर भी हुऐ हैं, ये अध्ययन क्रमशः बेन (2006), पेम और लिन्दा (2011), मेरी. क्रिश्चिन और डेमी (2010), पेम, बाइक और डेमी (2014) ने किये हैं।

उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में एक ऐसे अध्ययन किये जाने की आवश्यकता महसूस की गयी कि एन.सी.टी.ई. द्वारा आखिर विभिन्न अवधि के शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम लाने का क्या उद्देश्य है ? शोधार्थी ने यह महसूस किया कि अब तक विभिन्न अवधि के शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम के मूल्यांकन, प्रणाली, विकास, रूपरेखा, शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम के फायदे और

नुकसान आदि अनेक शोध विषय पर तो अध्ययन हुऐ हैं, लेकिन विभिन्न अवधि के शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावोत्पादकता पर कोई अध्ययन नहीं हुआ है।

शोधार्थी के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि क्या एक वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम की प्रभावोत्पादकता अधिक रही या द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रम की या फिर चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रभावोत्पादकता अधिक रहेगी ? उपरोक्त सभी प्रश्नों का उत्तर जानने के लिऐ शोधार्थी ने विभिन्न अवधि के शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावोत्पादकता का उत्पाद एवं परिणाम संकेतकों के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करने का निश्चय किया।

## 3.0 शोध औचित्य (Justification) –

किसी भी पाठ्यक्रम को स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाया जाता है, और संचालन के उपरान्त देखा जाता है कि जिन उद्देश्यों को लेकर चल रहे थे उनकी प्राप्ति किस सीमा तक हो पायी है। वर्तमान में संचालित बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण पाठ्यक्रम द्विवर्षीय है, इस द्विवर्षीय पाठ्यक्रम को पहले भी एन.सी.टी.ई. के द्वारा संचालित किया जा चुका है, लेकिन इतने बड़े स्तर पर द्विवर्षीय पाठ्यक्रम एन.सी.टी.ई. अधिनियम, 2014 के द्वारा संचालित किया जा रहा है। एन.सी.टी.ई. अधिनियम, 2014 में चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. (बी.ए. बी.एड., बी.एस.सी. बी.एड़) की भी बात कही गयी है, अतः भारत सरकार इस चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम को अपनाने जा रही है। अब यह कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर पर संचालित किया जायेगा।

सफल शिक्षक के लिये आवश्यक गुण एवं विशेषताओं में शिक्षित–प्रशिक्षित करते हुये अध्यापकों की भावी पीढ़ी को तैयार करना किसी भी स्तर पर अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की मूलभूत आवश्यकता को प्रकट करता है। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1953) के द्वारा माना गया था कि शैक्षिक पुनर्निमाण के लिऐ माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों का उधमगत प्रशिक्षण ही प्रमुख उत्तरदायी कारक है।

बी.एड. द्विवर्षीय कार्यक्रम ने एक वर्षीय कार्यक्रम की जगह ली है, और एन.सी.टी.ई. ने अपने 2014 के अधिनियम में सैद्धान्तिक पाठ्यचर्या, प्रायोगिक कार्य, इन्टर्नशिप, कार्यक्रम कार्यान्वयन आदि से सम्बन्धित उद्देश्य नये सिरे से निर्धारित किये हैं। किसी भी कार्यक्रम को संचालित करने के उपरान्त ही यह पता लग पाता है कि वह कार्यक्रम कितना प्रभावी रहा है। वर्तमान में संचालित द्विवर्षीय बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम अपनी प्रारम्भिक अवस्था में संचालित किया जा रहा था कि भारत सरकार ने चार वर्षीय एकीकृत बी.एड को संचालित करने की सम्भावना व्यक्त कर दी है। (वित्तमंत्री का संसद में बजट भाषण, 2018)

यह एक शाश्वत सत्य है कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है, समय गुजरने पर समाज की आवश्यकताऐं व समस्याऐं परिवर्तित होती रहती हैं, और इन आवश्यकताओं की पूर्ति एवं समस्याओं के समाधान हेतु हर सभ्य समाज शिक्षा की व्यवस्था करता है। शिक्षा व्यवस्था के द्वारा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पाठ्यचर्या की पुर्नरचना की जाती है।

वर्तमान में देश की शिक्षाप्रणाली में योग्य व प्रशिक्षित शिक्षकों की काफी कमी महसूस की जा रही है। शिक्षकों को उत्तम प्रकार से प्रशिक्षित करने और उनमें उचित शिक्षण कौशलों को विकसित करने के लिए एन.सी.टी.ई. ने सन् 2014 में अधिनियम बनाया है। यह अधिनियम शिक्षक–प्रशिक्षण से सम्बन्धित सभी विश्वविद्यालयों/संस्थानों के लिये बाध्यकारी है।

वर्तमान में देश में संचालित बी.एड. द्विवर्षीय शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम व चार वर्षीय एकीकृत बी.एड कार्यक्रम में सैद्धान्तिक पाठ्यचर्या, प्रायोगिक क्रियाकलाप, इन्टर्नशिप, मूल्यांकन, कार्यक्रम कार्यान्वयन आदि के बारे में नये सिरे से उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है। बी.एड. द्विवर्षीय शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम में 2014 के बाद से एक अतिरिक्त वर्ष लग रहा है और अब एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम जो चार वर्ष का होगा राष्ट्रीय स्तर पर संचालित किया जायेगा। पहले से भी एकीकृत बी.एड. को कुछ संस्थान क्षेत्रीय स्तर पर संचालित करते रहें हैं।

इस समय जो बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम संचालित किया जा रहा है एवं अब आगे आने वाले समय में एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम के रूप में संचालित किए जाने की सम्भावना है। इनको लागू करने से पहले एन.सी.टी.ई. ने कोई आरम्भिक अध्ययन (पायलट स्टडी) नहीं की है। अतः बिना किसी अध्ययन के अभाव में इस द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम की दिशा एवं दशा के अध्ययन हेतु शोधार्थी ने इस विषय को चुना। चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. को पहले भी कुछ संस्थान/विश्वविद्यालय अपने यहाँ संचालित करते रहें हैं, लेकिन अब इसे राष्ट्रीय स्तर पर लागू किया जा रहा है, अतः शोधार्थी इन सभी बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अध्ययन हेतु जिज्ञासु हुआ।

शोधार्थी के मन में यह जिज्ञासा जागृह हुई कि वर्तमान में संचालित द्विवर्षीय कार्यक्रम बेहतर है या 2014 से पहले संचालित होने वाला एक वर्षीय कार्यक्रम या चार वर्षीय एकीकृत बी. एड. कार्यक्रम शोधार्थी इस हेतु जिज्ञासु हुआ कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बी.एड. द्विवर्षीय कार्यक्रम कितना प्रासंगिक है और इन कार्यक्रमों के उत्पाद एवं परिणाम क्या प्राप्त हुऐ और इनमें तुलना कर यह देखने की आवश्यकता महसूस हुई कि किस प्रकार का कार्यक्रम अच्छे परिणाम देने में सक्षम है।

## 4.0 शोध प्रश्न (Research Questions) –

शोधार्थी के मन में अग्रलिखित शोध प्रश्न उत्पन्न हुऐ जिनका उत्तर वर्तमान अध्ययन के द्वारा प्राप्त हो सकेगा।

1 क्या बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अवधि का उनकी माँग अनुपात पर प्रभाव पड़ता है ?

2 क्या बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अवधि का परीक्षा परिणाम पर प्रभाव पड़ता है?

3 क्या बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अवधि का उत्पाद समानता पर प्रभाव पड़ता है?

4 क्या बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अवधि का विद्यार्थियों की भावी शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रवेश पर प्रभाव पड़ता है?

5 क्या बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अवधि का रोजगार प्राप्ति पर प्रभाव पड़ता है?

6 क्या बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अवधि का रोजगार से प्राप्त आय पर प्रभाव पड़ता है ?

7 क्या माध्यमिक शिक्षक–प्रशिक्षण की अवधि का अध्यापक पात्रता परीक्षा (T.E.T.) प्राप्ताकों पर प्रभाव पड़ता है ?

8 क्या माध्यमिक शिक्षक–प्रशिक्षण की अवधि शिक्षण कौशलों को परिष्कृत करने में सहायक है ?

9 क्या माध्यमिक शिक्षक–प्रशिक्षण की अवधि का शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की व्यावसायिक दक्षता (यथा शिक्षण विधियों, शिक्षण तकनीकी का उपयोग) पर प्रभाव पड़ता है ?

10 क्या माध्यमिक शिक्षक–प्रशिक्षण की अवधि बढ़ाने से शिक्षक–शिक्षा के वाणिज्यीकरण की समस्या का समाधान हो सकेगा ?

11 क्या माध्यमिक शिक्षक–प्रशिक्षण की अवधि शिक्षक–प्रशिक्षकों की व्यावसायिक गम्भीरता बढ़ाने में सहायक है ?

12 क्या माध्यमिक शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम की अवधि बढ़ाने से राष्ट्र को उत्तम गुणवत्ता के शिक्षक प्राप्त होंगे ?

उपरोक्त शोध प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिऐ अग्रलिखित शोध समस्या का चयन किया गया है।

## 5.0 समस्या कथन (Statement of the Problem) –

विभिन्न अवधि के माध्यमिक शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावोत्पादकता का उत्पाद एवं परिणाम संकेतकों के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन।

## 6.0 समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या (Definition of Terms) –

### 6.1 विभिन्न अवधि के माध्यमिक शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम –

**एक वर्षीय बी.एड.–** भारत मे एन.सी.टी.ई. द्वारा मान्यता प्राप्त ऐसा पाठ्यक्रम जिसके तहत माध्यमिक स्तर के शिक्षक तैयार करने के लिए एक वर्ष का प्रशिक्षण दिया जाता था।

**एन.सी.टी.ई. अधिनियम, 2014 के खण्ड–32 के उपखण्ड–2 के अनुसार द्विवर्षीय बी.एड.–**

भारत में एन.सी.टी.ई. द्वारा मान्यता प्राप्त द्विवर्षीय बी.एड. से तात्पर्य ऐसे पाठ्यक्रम से है, जो दो वर्ष में पूरा होता है। इसके तहत चार सेमेस्टरों को संचालित किया जाता है। यह माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को तैयार करने के लिये दिया जाने वाला सेवा पूर्व प्रशिक्षण है।

**एन.सी.टी.ई. अधिनियम, 2014 के खण्ड–32 के उपखण्ड–2 के अनुसार चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम–**

एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम को चार वर्ष के अन्तर्गत संचालित किया जाता है। इस कार्यक्रम में बी.ए., बी.एड. व बी.एस.सी., बी.एड. को मान्यता प्रदान की गयी है।

### 6.2 शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम –

ऐसा कार्यक्रम जो शिक्षकों को प्रशिक्षित करने हेतु प्रशिक्षण संस्थानों में संचालित किया जाता है।

### 6.3 प्रभावोत्पादकता (Effectiveness) –

**बिजनिस डिक्शनरी (2018) के अनुसार–** प्रभावोत्पादकता वह स्तर है, जिस पर उद्देश्य की प्राप्ति की जाती है तथा वह सीमा जहाँ तक कि लक्षित समस्याओं का समाधान किया जाता है अथवा उद्देश्यों को प्राप्त किया जाता है।

## उत्पाद संकेतक (Output Indicators) –

### विंढ़म, एम. डगलस (1988) के अनुसार–

उत्पाद संकेतकों से अभिप्राय किसी शैक्षिक कार्यक्रम की तात्कालिक प्रदा (Immediate outputs) से है। वर्तमान अध्ययन में निम्नलिखित उत्पाद संकेतकों को सम्मिलित किया गया है।

1 **मांग अनुपात** – प्रवेश के लिऐ उपलब्ध स्थानों के आवेदकों की संख्या के बीच अनुपात।

2 **सम्प्राप्ति प्रभाव** – पाठ्यक्रम के परीक्षा परिणाम।

3 **उत्पाद समानता** – विभिन्न वर्ग/समूहों के विद्यार्थियों के परीक्षा परिणामों में समानता।

## परिणाम संकेतक –

### विंढ़म, एम. डगलस (1988) के अनुसार–

परिणाम संकेतकों से अभिप्राय किसी शैक्षिक कार्यक्रम की दूरगामी प्रदा (Longturm outputs) से है।

1 भाषी शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रवेश–बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद शिक्षा की उच्च डिग्री/डिप्लोमा/प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रवेश।

2 भावी शिक्षा एवं प्रशिक्षण में उपलब्धि– भावी शिक्षा एवं प्रशिक्षण में परीक्षा परिणाम।

3 रोजगार – प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्तियों की वर्तमान समय में रोजगार की स्थिति।

4 आय – प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्तियों की रोजगार से प्राप्त आय की वर्तमान स्थिति।

5 भावी रोजगार में निष्पत्ति।

6 अभिवृत्ति इत्यादि।

## 7.0 अध्ययन के उद्देश्य –

1 विभिन्न अवधि के बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों का मांग अनुपात (Demand Ratio) के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

2 विभिन्न अवधि के बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों के परीक्षा परिणामों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3 विभिन्न अवधि के बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उत्पाद समानता (Output Equality) के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

4 विभिन्न अवधि के बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विद्यार्थियों की भावी शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रवेश के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

5 विभिन्न अवधि के बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों का रोजगार प्राप्ति के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

6 विभिन्न अवधि के बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों का रोजगार से प्राप्त आय के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

7 विभिन्न अवधि के माध्यमिक शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षक पात्रता परीक्षा (TET) प्राप्तांकों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

8 विभिन्न अवधि के माध्यमिक शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा प्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षण कौशलों, शिक्षण दक्षताओं का उनके विद्यालय प्रमुखों के मत के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

9 माध्यमिक शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अवधि का शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम के वाणिज्यीकरण पर प्रभाव का शिक्षक–प्रशिक्षकों एवं शिक्षक शिक्षा नियोजकों (Planners) के मत के आधार पर गुणात्मक अध्ययन करना।

10 माध्यमिक शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अवधि का शिक्षक–प्रशिक्षकों की व्यावसायिक गम्भीरता पर प्रभाव का शिक्षक–प्रशिक्षकों के मत के आधार पर गुणात्मक अध्ययन करना।

## 8.0 परिकल्पनायें (Hypotheses) –

1 विभिन्न अवधि के बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माँग अनुपात में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2 विभिन्न अवधि के बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों के परीक्षा परिणामों में कोई सार्थक अन्तर नही है।

3 विभिन्न अवधि के बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की उत्पाद समानता में कोई सार्थक अन्तर नही है।

4 विभिन्न अवधि के बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रशिक्षितों की भावी शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रवेश अनुपात में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5 विभिन्न अवधि के बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रशिक्षितों की रोजगार प्राप्ति अनुपात में कोई सार्थक अन्तर नही है।

6 विभिन्न अवधि के बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रशिक्षितों की रोजगार से प्राप्त आय में कोई सार्थक अन्तर नही है।

7 विभिन्न अवधि के बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों से प्रशिक्षितों के टी.ई.टी. प्राप्तांकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

## 9.0 सीमांकन (Limitation of the study) –

1 वर्तमान शोध अध्ययन निम्न प्रकार के माध्यमिक स्तर के शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अध्ययन तक सीमित है–

(क) एक वर्षीय बी.एड.

(ख) द्विवर्षीय बी.एड.

(ग) चार वर्षीय एकीकृत बी.ए. एड, बी.एस.सी. बी.एड.

2 प्रस्तुत शोध अध्ययन एन.सी.टी.ई. (उत्तरी क्षेत्र) के अन्तर्गत आने वाले 8 राज्यों में से 4 राज्यों (उत्तर प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा) तक सीमित है।

3 प्रस्तुत शोध अध्ययन इस क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय विश्वविद्यालय, राज्य विश्वविद्यालय, डीम्ड विश्वविद्यालय तथा राज्य विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय जहाँ एक वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम संचालित हो चुका है तथा द्विवर्षीय बी.एड. एवं एकीकृत बी. एड. कार्यक्रम संचालित हो रहें हैं तक सीमित है।

4 कार्यक्रम प्रभावोत्पादकता का अध्ययन दो प्रकार के प्रभावोत्पादकता संकेतकों तक सीमित है–

(क) उत्पाद संकेतक (Output indicators)

(ख) परिणाम संकेतक (Outcomes indicators)

## 10.0 अनुसंधान प्रक्रिया (Research Procedure)

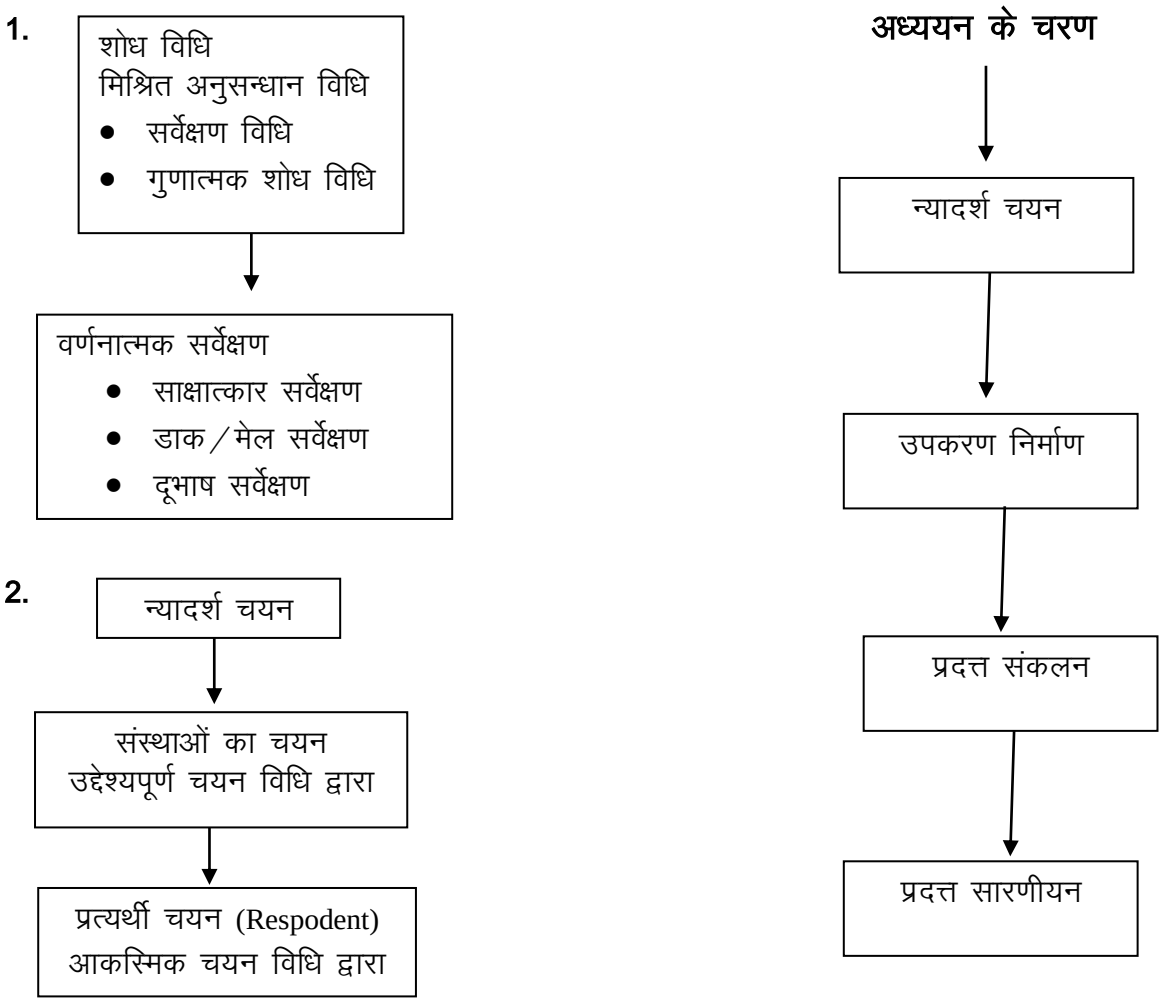

3.

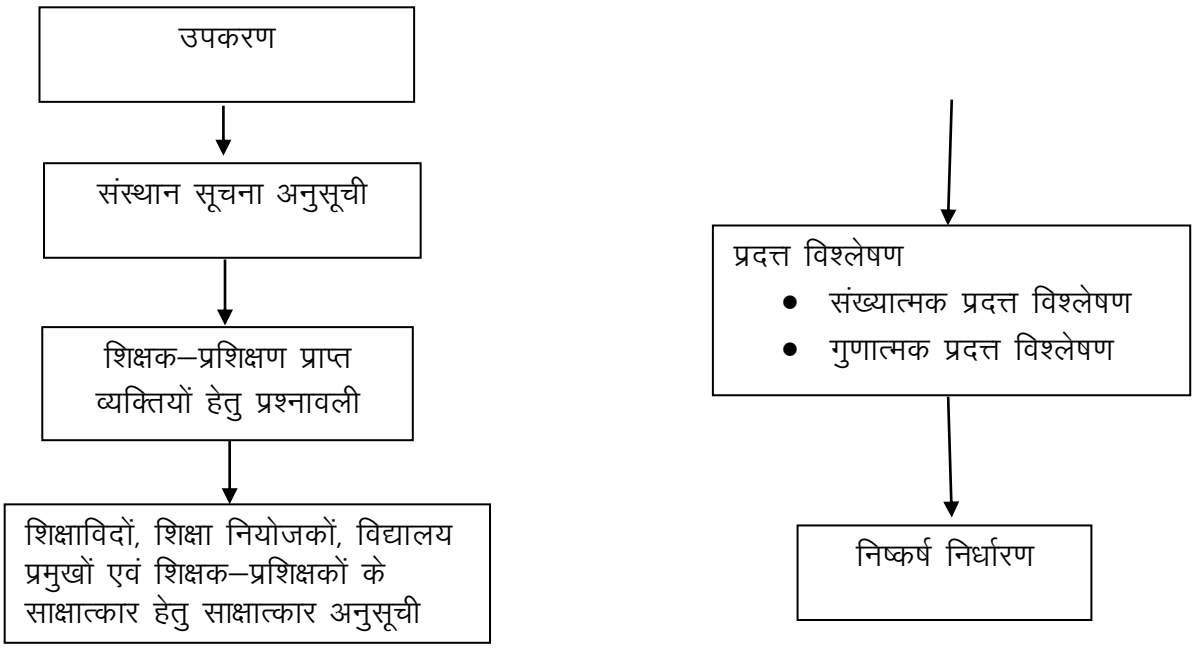


4.

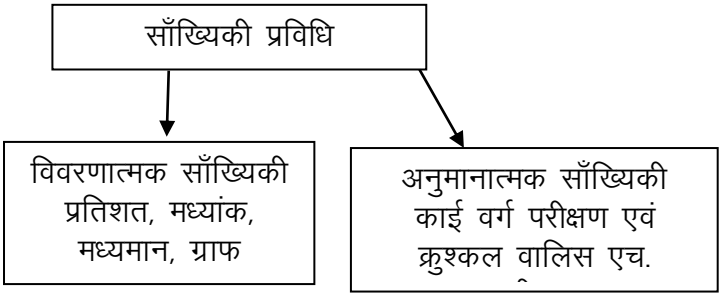


## 11.0 शोधविधि (Method of study)

वर्तमान अध्ययन में मिश्रित शोध विधि (Mixed Method of Research) का प्रयोग किया जायेगा।

**जोनसन, आनवेगबूजी और टरनर (2007) के अनुसार** – मिश्रित शोध विधि एक ऐसी शोध विधि होती है, जिसमें गुणात्मक व मात्रात्मक आंकड़ों का प्रयोग संयुक्त रूप से किया जाता है। मिश्रित शोध विधि में आँकड़ों के संग्रह के लिए एक से अधिक तरीकों का उपयोग किया जाता है। इस अनुसन्धान विधि में गुणात्मक और मात्रात्मक आँकड़े, विधियों, पद्धतियों और प्रतिमानों का मिश्रण शामिल है। मिश्रित शोध विधि का प्रयोग 1980 के दशक से शुरू हुआ था एवं 1990 के दशक के दौरान इस मिश्रित शोध विधि का प्रयोग व्यवहार, व्यापार, स्वास्थ्य विज्ञान, सामाजिक विज्ञान आदि क्षेत्रों में काफी लोकप्रिय हो गया।

## सर्वेक्षण शोध विधि–

**करलिंगर (1986) के अनुसार –** सर्वे शोध में छोटे एवं बड़े जीवसंख्या का अध्ययन उसी जीवसंख्या से प्रतिदर्श का चयन करके किया जाता है, ताकि समाजशास्त्रीय चरों तथा मनोवैज्ञानिक चरों के तुलनात्मक आपतन (Incidence), वितरण (Distribution) एवं अन्तर सम्बन्धों (Interrelations) की खोज की जा सके।

सर्वेक्षण विधि निम्न चार प्रकार की होती है–

(i) साक्षात्कार सर्वे (Interview Survey)

(ii) डाक सर्वे (Mail Survey)

(iii) पैनल सर्वे (Panel Survey)

(iv) दूरभाष सर्वे (Telephone Survey)

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ों की प्रकृति के अनुसार साक्षात्कार सर्वेक्षण, डाक/मेल (Mail) सर्वेक्षण, दूरभाष सर्वेक्षण का प्रयोग किया जायेगा।

**गुणात्मक शोध विधि** – गुणात्मक शोध विधि शैक्षिक विषयों में विनियोजित, पारंपरिक रूप से सामाजिक विज्ञान और अन्य संदर्भों में जांच की एक विधि है। गुणात्मक शोध विधि निर्णय के न केवल क्या, कहाँ, कब की छानबीन करती है बल्कि क्यों और कैसे को भी खोजती है।

## 12.0 प्रतिदर्श (Sample) –

## (अ) प्रशिक्षितों का चयन

प्रतिदर्श के रूप में 8 ऐसे संस्थानों को उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि से चुना जायेगा, जिनमें पहले एक वर्षीय पाठ्यक्रम संचालित हो चुका है एवं द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रम तथा बी.एड. का

एकीकृत चार वर्षीय कार्यक्रम (B.Ed. Integreted Programme) संचालित किया जा रहा है। इनमें से प्रत्येक संस्थान से 25 छात्रों को चुना जायेगा।

| संस्थान | एक वर्षीय बी.एड. | द्विवर्षीय बी.एड. | एकीकृत बी.एड. | कुल योग |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 25 | 25 | 25 | 75 |
| 2 | 25 | 25 | 25 | 75 |
| 3 | 25 | 25 | 25 | 75 |
| 4 | 25 | 25 | 25 | 75 |
| 5 | 25 | 25 | 25 | 75 |
| 6 | 25 | 25 | 25 | 75 |
| 7 | 25 | 25 | 25 | 75 |
| 8 | 25 | 25 | 25 | 75 |
| योग | 200 | 200 | 200 | 600 |

(ब) विद्यालय प्रमुख, शिक्षक–प्रशिक्षक, शिक्षाविदों एवं नियोजकों का चयन आकस्मिक विधि से किया जायेगा जिनकी संख्या निम्नवत् होगी–

(i) विद्यालय प्रमुख – 10

(ii) शिक्षक प्रशिक्षक – 20

(iii) शिक्षाविद् – 10

(iv) शिक्षा नियोजक – 10

योग = 50

## 13.0 उपकरण (Tools) –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा–

1 शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों हेतु सूचना अनूसूची।

2 विभिन्न अवधि के शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रशिक्षित व्यक्तियों हेतु प्रश्नावली।

3 विद्यालय प्रमुखों, शिक्षक–प्रशिक्षकों, शिक्षाविदों एवं शिक्षा नियोजको के साक्षात्कार हेतु स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया जायेगा।

## 14.0 साँख्यिकी प्रविधि (Statistical Techniques) –

गुणात्मक प्रदत्तों का विश्लेषण गुणात्मक प्रदत्त विश्लेषण विधि से किया जायेगा।

**विवरणात्मक साँख्यिकी** – प्रतिशत, मध्यमान, मध्यांक एवं ग्राफीय प्रस्तुतीकरण।

**अनुमानात्मक साँख्यिकी** – कुश्चल वालिस एच. एक मार्गीय प्रसरण विश्लेषण एवं काई–वर्ग परीक्षण का प्रयोग किया जायेगा।

## 15.0 शोध की उपादेयता (Significance of the study) –

समाज में शिक्षक का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है, वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को वैदिक परम्परायें, ज्ञान एवं तकनीकी कौशल पहुँचाने का केन्द्र है। आज से सैकड़ों साल पहले यह माना जाता था कि शिक्षक को भगवान ने कुछ विशिष्ट गुण दिये हैं, अतः ये लोग ही शिक्षण कार्य कर सकते हैं लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह माना जाता है कि एक शिक्षक को प्रशिक्षित करके उसमें शिक्षण कौशलों को विकसित किया जा सकता है।

आज शिक्षक–प्रशिक्षण हेतु बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम एन.सी.टी.ई. द्वारा संचालित किया जा रहा है और अब आगामी शैक्षिक सत्र से चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम संचालित किया जायेगा। प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा विभिन्न अवधि के बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा प्राप्त शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति किस स्तर तक हुई एवं इन सभी कार्यक्रमों की प्रभावोत्पादकता क्या थी आदि सूचनाऐं प्राप्त हो सकेगी। प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा विभिन्न अवधि के बी.एड. शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावोत्पादकता का उत्पाद एवं परिणाम संकेतकों के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है। अतः शोध निष्कर्ष से उत्पाद संकेतकों के अन्तर्गत आने वाले संकेतक–माँग अनुपात, सम्प्राप्ति प्रभाव एवं उत्पाद समानता के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

प्रस्तुत शोध के परिणाम के आधार पर यह जाना जा सकेगा कि परिणाम संकेतकों के अन्तर्गत आने वाले संकेतकों– भावी शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रवेश, भावी शिक्षा एवं प्रशिक्षण

में उपलब्धि, रोजगार, आय की वर्तमान स्थिति क्या है। सन् 2014 से पहले बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम एक वर्ष का था। सन् 2014 में एन.सी.टी.ई. ने अधिनियम बनाकर बी. एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम को दो वर्ष का कर दिया। वर्तमान समय में इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की अवधि चार वर्ष की हो रही है। अतः इन विभिन्न अवधि के बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों के तुलनात्मक अध्ययन से यह आसानी से जाना जा सकेगा कि कौन सी अवधि का बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम अधिक प्रभावी रहा जिससे अधिकतम शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हुई एवं उत्पाद व परिणाम सकारात्मक रहे।

शोध परिणामों से यह जानकारी हो पायेगी कि सैद्धान्तिक पाठ्यचर्या, प्रायोगिक क्रियाकलाप, इन्टर्नशिप एवं मूल्यांकन प्रक्रिया में किये गये परिवर्तनों से एन.सी.टी.ई. अधिनियम, 2014 के उद्देश्य किस सीमा तक पूरे हुए जिससे वर्तमान पाठ्यक्रम में परिवर्तन एवं सुधार किया जा सकेगा और शिक्षण का उन्नयन होगा।

प्रस्तुत शोध में विभिन्न अवधि के बी.एड. कार्यक्रमों को दृष्टिगत रखते हुए विद्यालय प्रमुखों, शिक्षक–प्रशिक्षकों, शिक्षाविदों एवं शिक्षा नियोजकों के साक्षात्कार के माध्यम से उनके अभिमत को जाना जा सकेगा। इस अभिमत के विश्लेषण के आधार पर शोधार्थी इस निष्कर्ष पर पहुँच पायेगा कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम की अवधि में परिवर्तन करने से शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण कौशलों, शिक्षण दक्षताओं, टी.ई.टी. में निष्पत्ति आदि प्रभावित होती है अथवा नहीं साथ ही शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम की अवधि प्रशिक्षित शिक्षकों की गुणवत्ता तथा शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के व्यापारीकरण की समस्याओं के समाधान में किस सीमा तक उपयोगी सिद्ध होगी। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अवधि में किये गये परिवर्तन के कोई सार्थक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं या नहीं। इस विश्लेषण के आधार पर शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की अवधि में किये गये परिवर्तनों का औचित्य एवं सार्थकता सुनिश्चित की जा सकेगी इस विश्लेषण के आधार पर शिक्षक शिक्षा नियोजकों, शिक्षाविदों, शिक्षक प्रशिक्षकों एवं विद्यालय प्रमुखों के अनुभवों, समझ एवं विवेक का प्रयोग शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की गुणवत्ता सुधार के लिए किया जा सकेगा।

# सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


- बुड घोषणा पत्र (1854), बसु, बी.डी. (1989) हिस्ट्री ऑफ एजूकेशन इन इण्डियाः कोस्मो पब्लिकेशन, मेरठ, उत्तर प्रदेश
- भारतीय शिक्षा आयोग (1882), भट्टाचार्य, जी.सी. (2016), अध्यापक शिक्षा, : अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, उत्तर प्रदेश
- राधाकृष्णन आयोग (1948), शील, अवनीन्द्र (2010), भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्यायें, : साहित्य रत्नालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश
- माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952), राव, भास्कर दिगुमूर्ती और हर्षिता दिगुमूर्ती (2000), एजूकेशन इन इण्डिया, : ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉपोरेशन, नई दिल्ली
- ई.ए. पीयर्स समिति (1955), मिश्रा, बी.के. और मोहंती, आर.के. (2000), ट्रेन्ड्स एण्ड इस्यूज इन इण्डियन एजूकेशन : सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, उत्तर प्रदेश
- सर्वे शोध (1986), सिंह, अरूण कुमार (2010), मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ : मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन, नई दिल्ली।
- कोठारी, डी.एस. (1966), शिक्षा और राष्ट्रीय विकास : आयोग की रिपोर्ट (1964–66), शिक्षा मन्त्रालय : नई दिल्ली, भारत सरकार
- कोठारी कमीशन (1964–66), जयपालन, एन. (2000), हिस्ट्री ऑफ एजूकेशन इन इण्डिया : अटलान्टिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली,
- राधाकृष्णन आयोग (1948). अपोइन्टमेन्ट एण्ड प्रोसीजर ऑफ द कमीशनः आयोग की रिपोर्ट (1948), शिक्षा मन्त्रालय, नई दिल्ली
- एन.सी.ई.आर.टी. (1969) द्वारा तैयार पाठ्यक्रम, गुप्ता, एस.पी. और गुप्ता, अलका (2013) भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याऐं : शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

- एन.सी.टी.ई. (2009) नेशनल कार्यकुलम फ्रेमवर्क फॉर टीचर एजूकेशन : टूवाईस प्रीपेरिंग प्रोफेशनल एण्ड ह्यूमन टीचर, नई दिल्ली
- यू.जी.सी. (1986) द्वारा प्रस्तावित बी.एड. पाठ्यक्रम, पंडा, बी.एन. और तिवारी, ए.डी. (1997), टीचर एजूकेशन : ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली
- एन.सी.एफ. (2005 – 2009) लाल, रमन बिहारी (2012), भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्यायें : रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ, उत्तर प्रदेश
- एन.सी.टी.ई., (2014) बी.एड. न्यू रेगुलेशन, द गजट ऑफ इण्डिया : एक्स्ट्राआर्डिनरी (भाग 3–सेक्शन–4)
- करीक्यूलम फ्रमवर्क : द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रम : नेशनल काउंसिल फॉर टीचर ऐजूकेशन, हंस भवन (विंग–2), 1 बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली
- जयकुमार, आर. (2016), भारत में द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रम के फायदे और नुकसान, इण्टरनेशनल जनरल ऑफ करेन्ट रिसर्च एण्ड मॉडर्न एजूकेशन 1 (1), Retrived from https://ijcrme.rdmodernresearch.com/wp-content
- सुषमा, आर. (2016), द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रम के प्रति शिक्षक–प्रशिक्षकों की अभिवृत्ति, अन इण्टरनेशनल स्कोलरी रिसर्च जनरल, Retrived from https://wwwsrjis.com
- कौर, सिंघा, मनप्रीत और बजाज रूचि (2015), गुरूगोविन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली के सन्दर्भ में नये बी.एड. पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन में चुनौतियाँ, Retrived from https://www.amity.edu/aien/aijte/article2017
- शफकत हुसैन खान, ए. और मोहम्मद सईद, बी. (2009), बी.एड. कार्यक्रम की गुणवत्ता का मूल्यांकन : छात्रों के अपने कॉलेज अनुभव के विचार, Retrived from https://wwwsciencedirect.com/sciencearticale/pii/S0742051X09002091
- प्रधान, परशुराम (2016) भारत में शिक्षक शिक्षा की रूपरेखाऐं Retrived from https://www.renupublishers.com/image/articles/147376218205

- बंसल, मधुरलता (1999), औपचारिक एवं अनौपचारिक स्रोतों के माध्यम से नामांकित बी. एड. छात्राध्यापकों के आत्मप्रत्यय, शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं समायोजन के सन्दर्भ में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, Retrived from http://hdl.handle.net/10603/114731
- सिंह, यशपाल (1999), औपचारिक एवं अनौपचारिक स्रोतों के माध्यम से नामांकित बी.एड. छात्राध्यापकों के आत्मप्रत्यय, शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं मानवीय मूल्यों के सन्दर्भ में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन। Retrived from http://hdl.handle.net/10603/115855
- कुमारी किरन (2010), शिक्षा मनोविज्ञान में सेवापूर्ण शिक्षकों के लिये बहुमाध्यम अधिगम की प्रभावशीलता का अध्ययन, Retrived from http://hdl.handle.net/10603/114865
- हू. एहुजा (2014), मैनलैण्ड में दो पायलट विश्वविद्यालयों में निःशुल्क शिक्षा नीति के सन्दर्भ में शिक्षक–शिक्षा पाठ्यक्रम का मामला अध्ययन, Retrived from http://repository.hkbu.edu.hk/cgi/viewcontent.cgi?article=1030&context=etdoa
- नीमी, हेनल और सिंहवोनेन, रितका जक्कू (2006), माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों का शिक्षक–शिक्षा पाठ्यक्रम, Retrived from https://www.revistaeducation. education.es/ re350/re35008ing
- लिन्डसे, मरथा ऐन (2000), नवाजो हाईस्कूल के छात्रों को इन्टरनेट सूचना साक्षरता सिखाने के लिऐ पाठ्यक्रम विकास का रचनात्मक अध्ययन, Retrived from http://www.u.arizona.edu/~mlindsey/thesis
- कोम्पटन, लिली के.एल. (2009), ऑनलाइन शिक्षण हेतु सेवापूर्ण शिक्षकों की तैयारी Retrived from http://lib.dr.iastate.edu/etd

- डगलस, एम. बिंढ़म (1988) अफेक्टिव इन्डीकेटर्स ऑफ इन इकोनॉमिक एनालाइसिस ऑफ एजूकेशनल एक्टिविटि, इन्टरनेशनल जनरल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, Vol.12, Nu-6.Retrived from https://eric.ed.gov/?id=EJ386572
- रेनोल्डस, डेविड. सिमन्स, पेम. फ्रेन, बाइक और डेमा, जान बेन (2014), एजूकेशनल अफेक्टिवनेस रिसर्च : ऐ स्टेट ऑफ द आर्ट रिव्यू, Retrived from https://research-repository.griffith.edu.au/bitstream/handle/10072/70042/103025
- सेमन्स, पेम और बेकम, लिन्दा (2011) अफेक्टिव स्कूल एक्विटी एण्ड टीचर अफेक्टिवनेस : अरिव्यू ऑफ द लिटरेचर, Retrived from www.ugr.es/ recfpro/rev153Art2en
- डेमी, जान वेन (2006), एजूकेशनल अफेक्टिवनेस अन इन्ट्रोडक्शन टू इन्टरनेशनल एण्ड फ्लेमिश रिसर्च ऑन स्कूल्स, टीचर्स एण्ड क्लासेज, Retrived from https://Iris.Kuleuven.be/bitstream/123456789/126919/chaireFrancqui2006
- आपडेनकर, मेरी क्रिश्चिन और डेमी, जान वेन (2010), द अफेक्ट ऑफ स्कूल एण्ड क्लास ऑन मेथमेटिक्स अचीवमेन्ट, अन इण्टरनेशनल जनरल ऑफ रिसर्च पोलिसी एण्ड प्रैक्टिस, Vol.13, 2002, Issue 4. Retrived from https://www.tandfonline.com/doi/abs/10.1076/sesi 13.4.399.10283?src=recsys
- डेविड, डब्ल्यू पाइल और ऐलन शेयर्स (2006), ऐ बी.एड कोर्स फॉर सर्विग टीचर्सः अन एवेलुऐशन ऑफ द फर्स्ट ईयर, Retrived from https://www.tandfonline.com/doi/ pdf/10.1080\0305763800070103
- सूद, डम्मर सिंह (2017) फोर ईयर बी.एड. कोर्स साइकल फाइनल - Retrived from https://www.slideshare.net/Dammarsaud four-year-bed-course-cycle-final
- Shodhganga. Inflibnet.ac.in/handle/10603/93458
- Businesdictionary.com
- Johnson, Onwuegbujie & Turner (2007). Mixed Method Research. Retrived on 19/05/2018 from https://en.wikipedia.org/wiki/multimethodology